स्वामी महेष्वरानन्द ने की आचार्य महाप्रज्ञ से भेंट

आचार्य ने पूछा ''हिन्दू कितने हिन्दुत्व को जी रहे हैं''

लाडनूं, 4 मई, 2009।

महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दजी ने राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ से विशेष भेंट की। पिछले 40 वर्षों से आचार्यश्री महाप्रज्ञ के करीबी रहे स्वामी महेश्वरानन्द ने वार्ता के दौरान हिन्दुस्तान के वासियों के प्रति अपने दर्द को जाहिर करते हुए कहा कि आज देश के सामने बहुत बड़ी समस्या है। आतंकवाद से ज्यादा धर्मांतरण का खतरा बढ रहा है। कुछ धर्म अपना प्रभुत्व जमाने लगे हुए हैं। इस पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि हमें दूसरों की तरफ देखने की बजाय खुद को मजबूत बनाना चाहिए। आज हिन्दु खुद कितना हिन्दुत्व को जी रहे हैं, यह प्रश्न प्रमुखता से सामने आ रहा है। जब खुद सजग होंगे तो कोई समस्या नहीं बनेगा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं स्वामी महेश्वरानन्द के बीच करीब 20 मिनट तक चले वार्तालाप में देश के ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा हुई। जिससे इस बात को महसूस किया गया कि दोनों संत देश एवं देशवासियों के सर्वांगीण विकास के प्रति जागरूक हैं। प्रत्येक मानव संयम और सुख शांति से जीए इस हेतु अहिंसा प्रशिक्षण को जरूरी मानते हैं। उल्लेखनीय है कि 353 अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अनुशासना में सम्पूर्ण देश में संचालित हो रहे हैं।

इस अवसर पर जैन विश्व भारती के उपमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया ने स्वामी महेश्वरानन्द को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। श्री भागचन्द बरड़िया, डॉ. जगतराम भट्टाचार्य आदि लोग उपस्थित थे।

''भावशुद्धि से बनता है संतुलित जीवन''

– साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा

लाडनूं, 4 मई, 2009।

जैन विश्व भारती स्थिति सुधर्मा सभा में धर्म सभा को संबोधित करते हुए साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा कि हर धार्मिक व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि संयम की साधना करे। स्वाध्याय, ध्यान को आभ्यंतर तप बताते हुए साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि धार्मिक व्यक्ति भावशुद्धि के आधार पर अपने आपको साधें। मनुष्य में प्रियता और अप्रियता के भाव होते हैं। व्यक्ति भावना के प्रयोग कर अपने जीवन को संतुलित बन सकता है और अपने आपको अध्यात्म के शिखर तक पहुंचा सकता है।

साध्वीप्रमुखा ने यह भी कहा कि जो व्यक्ति अपने जीवन में अच्छा काम करता है वह व्यक्ति तेजस्वी बनता है। जिस व्यक्ति का दिमाग स्वस्थ होता है, हृदय संवेदनशील होता है और जिसके हाथ सक्षम होते हैं और वे पुरुषार्थ के साथ प्रयोग करते हैं तो वे व्यक्ति सफल हो जाते हैं।

– अशोक सियोल

99829 03770